सहज राजयोग की विधि

■ आत्मिक स्थिति :

मैं एक ज्योति बिंदु आत्मा हूं । मैं आत्मा इस शरीरमें भृकुटि के बीचमें बिराजमान हूं । मैं देह नहीं हूं। यह देह तो मुज आत्मा के रहने का स्थान है । यह शरीर तो जड है, जब कि मैं आत्मा चैतन्य स्वरूप हूं । शरीर हाड माँसका पिंजरा है, विनाशी है, मैं आत्मा अजर-अमर-अविनाशी हूं । शरीर रूपी डिब्बीमें मैं आत्मा चैतन्य हीरा हूं । आँख द्वारा देखनेवाली, कान द्वारा सुननेवाली, कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म करनेवाली, कर्म का फल भोगनेवाली और सुख दुःख का अनुभव करनेवाली मैं आत्मा ही हूं । यह शरीर तो मुज आत्मा रूपी राजा की प्रजा है । मैं आत्मा शरीर को कन्ट्रोल करनेवाली चैतन्य शक्ति हूं ।

पाँच तत्वों का बना यह शरीर मेरे साथ नहीं आनेवाला है । यह पराया है । काम, क्रोध, लोभ, अहंकार, इर्ष्या, तिरस्कार, स्वार्थ, आसक्ति, चिंता यह सब तो पराये धर्म है । उसने ही मेरे स्वधर्म को भूला दिया है । लेकिन अब तो मैं मेरे स्वधर्म में ही स्थित रहुंगा । मैं आत्मा प्रेम, शांति, आनंद, ज्ञान, शक्ति, प्रकाश और पवित्र स्वरूप हूं । जिसका अनुभव मुज आत्मा के पिता, शिवबाबा मुझे करा रहे है । उसमें स्थित होकर मैं आत्मिक आनंदका अनुभव कर रहा हूं ।

■ देह और देह की दुनिया से उपराम स्थिति :

इस तरह मनन-चिंतन करते हुये, मन-बुद्धि को सूर्य-चंद्र-सितारोंसे भी पार शांतिधाम में ले जाओ। आत्मा इस परलोक, ब्रह्मलोक की निवासी हूं । इस अखंड ज्योतिधाम से मैं सृष्टि पर आया था । जन्म-जन्मान्तर अनेक नाम-रूप वाले शरीर धारण करके मैंने पार्ट बजाया । परंतु, अब फिरसे इस ज्योतिधाम में वापिस जाना है । अहा, पाँच तत्वोंसे पार, इस परमधाममें सर्वत्र शांति ही, शांति है । पवित्रता है... आनंद है... बस अब तो, मैं आत्मा सर्व बंधनों से मुक्त, कर्मातीत अवस्था में स्थित हूं । मैं ज्योतिबिंदु हूं... शांत स्वरूप हूं... शुद्ध हूं... अेक चैतन्य शक्ति हूं ।

■ परमात्मा शिवबाबा के साथ अलौकिक मिलन का आनंद :

परमपिता परमप्रिय शिवबाबा, मैं आपकी अविनाशी संतान, आपके पास आ गया हूं । जन्म-जन्मान्तर मैं आपको कंई जगह ढूंढ रहा था । आपके साथ मिलन मनाने के लिए तडप रहा था । अब तो बाबा आपने खुद आपकी गोदमें मुझे बुला लिया है । ''पाना था सो पा लिया'' । यह अनुभव मैं कर रहा हूं । मैं धन्य हो गया हूं । मीठे बाबा, आप तो शांति के सागर हो, आनंद के सागर हो, सर्व आत्माओं के आप परमपिता हो, विश्व के मालिक हो । परमधाम, शांतिधाम के निवासी आप निराकार, अकालमूर्त, अकर्ता और अविनाशी हो । आप ही दुःखहर्ता, सुखकर्ता, गति-सद्गति दाता हो । सृष्टि के आदि, मध्य, अंत का ज्ञान देनेवाले, सृष्टिवृक्ष के बीजरूप, सर्वशक्तिमान, विश्व कल्याणकारी आप ही हो । बाबा... आप ही मुझे पतित से पावन, मनुष्य से देवता और तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हो । बाबा, आपको मैं कैसे भूल सकुं ? बस, अब तो त्रिमूर्ति, त्रिकालदर्शी, त्रिलोकीनाथ प्यारा बाबा की मैं संतान हो गई हूं । धन्य-धन्य हो गया हूं ।

■ लाइट-माइट की किरणों द्वारा आत्मा में शक्ति का संचय :

शिवबाबा, आप प्रकाश और शक्ति के अखूट पूंज हो । मुझ आत्मा पर यह प्रकाश चारों ओर फैल रहा है । मैं आत्मा लाइट स्वरूप, माइट स्वरूप बन रही हूं । अष्ट शक्ति का खजाना मैं आत्मा पा रही हूं । मैं अति सौभाग्यशाली हुं कि मेरी प्रीत आप के साथ है । बाबा आपने मुझे अतिन्द्रिय सुख एवं खुशी का अपार खजाना दे दिया है । बस बाबा, मैं तो केवल आपका ही हूं ।

अहा, बाबा अब तो मेरी जन्मों जन्म की प्यास मिट गइ है । बस, आप ही मेरा सर्वस्व हो । आप का मैं अमर पुत्र बन चुका हूं । भविष्य २१ जन्मों की बादशाही मुझे मिल गइ है । आपकी श्रीमत पर चल कर मैं मेरा जीवन कल्प-कल्प धन्य करूंगा । आपको मैं कभी भी नहीं भूलूंगा... मीठा बाबा... ।

-:: ओमशांति ::-